ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-11* February-2021
Anthology : The Research

वासवदत्ता में प्रतिबिम्बत शिल्पकलाएँ–एक अध्ययन के रूप में

Artifacts in Vasavadatta - As A Study

Paper Submission: 05/02/2021, Date of Acceptance: 24/02/2021, Date of Publication: 25/02/2021

जितेन्द्र सिंह
प्रवक्ता,
कला विभाग,
मुरली मनोहर इण्टर कॉलेज
ईशपुर टील, शामली भारत

रमेश चन्द्रा
प्रवक्ता,
संस्कृत विभाग
मुरली मनोहर इण्टर कॉलेज
ईशपुर टील, शामली भारत

सारांश

गुप्तकालीन कृति श्वासवदताश में गद्यकार सुबन्धु ने तत्कालीन कला विधाओं को बखूबी परखा और कला शैलियों को यंत्र तंत्र शब्द संकल्पनाओं से उकेरने का प्रयास किया है आधुनिक पाठकों और अध्येताओ के लिए वास्तविकता में दृष्टिगत वस्तु कला मूर्तिकलाए चित्रकलाए काव्य कला आदि का तुलनात्मक अध्ययन करके गवेषणाओ व संवेगात्मक मनोभावों को प्रस्तुत करना वादिनी हो जाता हैं। वासवदता का अध्ययन करना कला प्रेमियों के लिए कला संबंधी जिज्ञासाओं के समाधान हेतु मील का पत्थर साबित हुआ है।

In the Gupta work of breathing, prose Subandhu has tried to fine-tune the then art forms and art styles with the words Yantra Tantra for modern readers and scholars by making comparative study of visual art sculptures, paintings, poetic arts etc. in reality. It becomes a pleasure to present emotions. Studying realism has proved to be a milestone for art lovers to solve art related curiosities.

मुख्य शब्द : वासवदत्ता, शिल्पकलाएँ , संगीत कला चित्रकला मूर्तिकला स्थापत्य कला काव्यकला।

Habits, Artworks, A Musical Art, Painting, Sculpture, Architecture, Poetry.

प्रस्तावना

प्राचीन काल में कलाएँ नागरिक जीवन की अंग थी। कला का सम्बन्ध मनुष्य के अन्तःकरण की अनुभूतियों से है, मानव अपने हृदय की भावनाओं को कला के रूपमें अभिव्यक्त करता है, अर्थात, मानव अपने मन, शरीर व इन्द्रियों के द्वारा मानवोपयोगी तथा आनंददायक जिस वस्तु का निर्माण करता है, वह कला है। इसका विकास प्रागैतिहासिक युग से होता रहा है, सिन्धु सभ्यता से प्राप्त शिवमूर्ति, (नटराजरूप) कुषाणकालीन गांधार एवं मथुरा शैलियाँ कला के विकास को दर्शाते हैं। रामदत्त भारद्वाज कला को 'कवि का हास्य कहते है। कामसूत्र, शुक्रनीति, शिवतत्व रत्नाकर आदि में 64 कलाओं का वर्णन प्राप्त होता हैं। कलाएं दो प्रकार की होती है– उपयोगी एवं ललित कलाएँ। द्वितीय कला में नाट्य, संगीत, चित्र, स्थापत्य आदि विभेद है। वास, के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि तत्कालीन समाज में ये कलाएं चरमोत्कर्ष पर थी यही कारण है कि गुप्तयुग स्वर्णयुग की श्रेणी में माना गया।

अध्ययन का उददेश्य

वर्तमान में छात्र छात्राओं के स्वावलंबन को ध्यान में रखते हुए उनकी सृजनात्मक अभिव्यक्ति को जागरुक करना।

संगीत कला

संगीत कला उतना ही प्राचीन है जितना मानवजाति का इतिहास। सामवेद संगीत विद्या का आधार है, उदात्तादि का स्वरूप ऋग्वेद से ही प्राप्त होने से मूलरूप ऋग्वेद ही है। शास्त्रीय पक्ष में नाट्यशास्त्र संगीत विद्या का विकसित रूप प्रकट करता है। उसके तीन अंग स्वीकार करते है–नृत्य, गीत, वाद्य। लेखक के समय में इस कला का चरम विकास हुआ। लेखक ने स्वर ताल, जाति एवं गीत भेदों का स्पष्ट उल्लेख किया है। यूँ तो गुप्तशासक संगीतकला के महान प्रेमी थे, सिक्कों पर समुद्रगुप्त को वीणावादक के रूप में चित्रित करना इसका प्रकाट्य प्रमाण सुबन्धु ने प्रातः गीयमान विभास राग तथा "चर्चरी ताल का उल्लेख किया–

(प्रतिदशिमश्लीलप्रायवैहासकिगीयमानगीतश्रवणोत्सुकषड्गिजनसमारब्धच

चरी तालाकणनमयदनेकपथकिः वा.ध113)

वासवदता के भवन में मुरजवाद्य ध्वनि हो रही –(क्वचत्गिम्भीरमुरजरवाहतसमदनीलकण्डम् वा. 196) परीवाद शब्द वीणा वाद्य का सूचक है। गान्धारादि स्वरों का प्रयोग, तथा मूर्छनाओं के प्रयोग का उल्लेख है। खेतों की रक्षा करने वाली नारियों अपने मनोविनोदार्थ इनका प्रयोग करती थी। लेखक द्वारा नट, नर्तक एवं लास्य शब्दों का प्रयोग नृत्यकलाके स्पष्ट संकेत है इसकी पुष्टि वेश्याओं द्वारा भी हो जाती है इसे (तत्र केचत् कलाड़कुराविदितिनगरमण्डनाः वा0 125)। यवनकिापटैः" शब्द के उल्लेख से नाटक क्रीडा का प्रचलन प्रमाणित होता है– (संचारदारूण यदनकिापट इव मलनर्तकस्य–वास. 226)

चित्रकला

चित्रकला का प्रबल प्रमाण विष्णुधर्मोत्तर पुराण मे प्राप्त होता है जहाँ चित्रकला को श्रेष्ठ मंगलकारी, और पुरुषार्थ प्रदात्री कहा है. यह सब कलाओं में श्रेष्ठ और प्रधान है। वह कला मानव के सुकोमल भावों एवं मानसिक एकाग्रता की साक्षात् अभिव्यक्ति है। भाव, वर्ण एवं आलेखन इनकी सफलता के तीन आवश्यक तत्व माने जाते है जिसके लिए फलक की आवश्यकता पड़ती है। कन्दर्पकेतु हृदयफलक पर संकल्प रूपी तूलिका में अपनी प्रेमिका के चित्र को खींचता है। वासवदत्ता भी नायक को अपनी सखी चित्रलेखा के द्वारा लिखवाना चाहता है। (चपले चित्रलेखे। चित्रपटेविलिहिचित्तचोरजनम–142) चित्रलेखा नाम ही चित्र रचना में पटु होने का प्रमाण है। रचना, पट तथा भित्ति पर होती थी। विरही वासवदत्ता को नायक चित्रपट पर बना हुआ स्पष्ट दखिाई देता है– (चित्रपटे पुरोदशतिमवि तमतिस्ततो विलोकयन्ती व्यतष्ठित–147) उसकी सखियां कपोलों पर पत्र रचना एवं मकर रचना करने में विशेष प्रवीण थी– (सुरेख सुकयोलरेजे सुरक्षा सुरचर्चिता श्रीत्वमसि) सुबन्धु को तीनों लोकों के चित्र रूपी नाट्यशाला के संसार रूपी भित्ति की चित्रलेखा के समान प्रतीत हो रही है (संसारभित्तिचित्रलेखामिव त्रैलोक्यम् चित्र चित्तरंगस्य–49) इस प्रकार स्पष्ट होता है किचित्रकला भी अपने पूर्ण विकास पर थी।

मूर्तिकला

मूर्तिकला में कलाकार अपनी भावना को मिट्टी प्रस्तर आदि साधनों के द्वारा एक मूर्त रूप प्रदान करता है. स्पष्टतः संकेत के अभाव में सुबन्धु प्रयुक्त वासवदत्ता की शब्दावली के आधार पर यह ज्ञात होता है कि उस समय प्रस्तर आदि पर मूर्तियों की खुदाई होती होगी। नायक, नायिका को दृष्टि में खुदी हुई और हृदय में स्थापित–सी समझ रहा है– (निखातामिव हृदये प्रियतमामाजुहाव वा. पू. 51) इसी तरह नायिका भी समझ रही है कि– (दिक्षु, विलीखतिमिव नमस्युत्कीर्णमिव) यहाँ विलखित एवं उत्कीर्ण शब्द ही चित्रकला एवं तक्षणकला का संकेत देते है। कुसुमपुर के भवनों में पुत्तलिकायें बनी हुई हैं (सालभिज्जकोपेतैः अस्ति मन्दरगिरि गैरविप्रशस्तसुधाधवलैवृहत्कथालम्बेरविना. पृ–85) ये उदाहरण तत्कालीन मूतकिला के साक्षी है।

स्थापत्य कला

भवन, तथा उससे सम्बन्धित रचनाओं के निर्माण की कला स्थापत्य या वास्तुकला कहलाती है।आधुनिक भाषा में इसे इजीनियरिंग कह सकते है। वासवदत्ता के गगनचुम्बी भवन की वणना, एवं कुसुमपुर के मंदराचल के तुल्य वेश्म इस कला के साक्षात उदाहरण है। कुसुमपुर देवमंदिरों से सुशोभित है।

(अदितिजठरमिवानेकदेवकुलाबध्यासतिम् वा. 99 पृ.) भवनों में झरोखें गाय की आंख के समान जालीदार होते थे–

(सुग्रीव सैन्यैरवि सगावाक्षैः 86) रोशनदान. तोरण आदि बने होते थे जिन पर मालाएँ बंधी रहती थीं, नगर के चारों ओर प्रकाशमण्डल भी बनाया जाता था– (मन्मथमहानिधिजघनकोशमन्दिरकनकप्रकारेण–वा. पु. 40) दरवाजों में किवाड़ लगाने की प्रथा थी। भवनों में कृत्रिम नदियां, पक्की बनायी जाती थी जिसमें हस्तिनी तैरती थी।

(कुल्यायिमानकरिणीभिः अनेकाभिर्नदीरूपशोभितम–वा.पृ.195)

लेखक ने वज्रलेप नामक चूर्ण द्रव्य का भी उल्लेख किया है– (वज्रलेपघटति–मिव–140) इसे हम आधुनिक भाषा में सिमेंट कह सकतेहै। इस प्रकार स्थापत्य कला चरमोत्कर्ष पर थी, वस्तुतः गुप्तकाल से स्थापत्यकला का वह स्वरूप इतिहास में चित्रित किया है जो [illegible] में ही दिखाई पड़ता है।

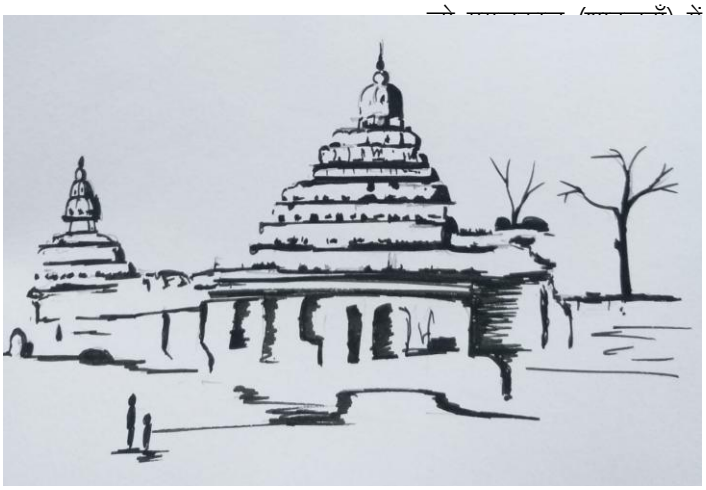

काव्यकला

महाकवि सुबन्धु प्रणीत वासवदत्ता जैसी कथा प्रौढगद्य का चरम विकास है। नायिका वासवदत्ता का प्रणयपत्र पद्यमय ही है। नायिका–भवन में सखियां मदनलेखा के लिए परस्पर वार्तालाप कर रही है (मदनलेखे। विलिख मदनलेखं मलयानिलस्य वा. 206) ऐसा प्रतीत होता है कि वैदभीरीति की ओर से लोगों की रुचि हट चुकी थी। उच्छवासपूर्ण रचना करने वाला ही सात्विक समझा जाता था। वह अपने काव्यों में निरर्थक शब्दों का प्रयोग नहीं करता था। राजाओं के आश्रय में इस कला का प्रचार एवं प्रसार हो रहा था राजा चिन्तामणि स्वयं काव्यप्रेमी है। श्रृंगारशेखर के राज्य में भी काव्य रचना को विशेष प्रोत्साहन प्राप्त है। लेखक के द्वारा विभिन्न वृतों का उल्लेख पद्यमय रचना में इसके पुष्ट प्रमाण है।पद्यों का वर्णन कर लेखक कवि होने का भी गौरव प्राप्त करता है।

उपरोक्त शीर्षक की वर्तमान में प्रासंगिकता है विविध प्रकार की कलाओं व हस्तशिल्प का प्रारूप जिनमें स्थापत्य , आभूषण कला , नाट्यकला , संगीत , वैद्य, नृत्य, काव्यशास्त्र, काष्ठकारी आदि का अदभुत संगम है , जहाँ शिल्पशास्त्र मे मूर्ति, भवन , मंदिर अथवा आवास वहीं अन्य कलाएं भी उतना ही महत्त्व रखती है हिंदू साहत्यि में कहीं 45, कहीं 64 तो कहीं 86 कलाओं का सन्दर्भ भी है, परन्तु वर्तमान में छात्र छात्राओं के स्वावलंबन को ध्यान में रखते हुए उनकी सृजनात्मक अभिव्यक्ति, अनुशासन, व्यवस्थापन, एकाग्रता से उनके व्यक्तित्व का विकास तो होगा ही परन्तु बेरोजगारी की दिशा में भी उपरोक्त का व्यावहारिक प्रयोग मील का पत्थर साबित हो सकता है । महात्मा गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा का महत्त्व उपरोक्त को सार्थक सिद्ध कर सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अग्नि पुराण आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौ0 संस्कृत सीरिज ऑफिस वाराणसी, 1966*
2. *अथर्ववेद सं0 विश्वबन्धु, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थानम् होशियारपुर, 1961*
3. *ऋग्वेद सं0 विश्वबन्धु विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थानम् होशियारपुर 1964*
4. *कादम्बरी बाणभट्ट, ब्या0 आचार्य शेषराज शर्मा रेग्मी चौ० सुरभारती प्रका० वारा0. 1982*
5. *कादम्बरी बाणभट्ट, व्या0 रामशिया मिश्र इलाहाबाद, 1999*
6. *काव्यादर्श दण्डी, डा० धर्मेन्द्र कुमार गुप्त मेहरचन्द लक्ष्मण दास दिल्ली, 1973*
7. *काव्यालंकार भामह, व्याख्या० देवेन्द्रनाथ शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना, 1962*
8. *काव्यालंकारसूत्र वामन, व्या० डा० बेचन झा, चौ0 सं० संस्थान, वारा0 1996*
9. *काव्यप्रकाश मम्मट, सं डा0 नगेन्द्र, व्या0–आचार्य विश्वेश्वरानन्द सिद्धान्तशिरोमणि ज्ञानमण्डल लि0 वारा0, 1985*
10. *तिलक मंजरी धनपाल, पत्रिपालः अहमदाबाद, 1969*
11. *दशरूपकम धनंजय, व्या० वारा० डा० भोलाशंकर व्यास,*
12. *दशकुमारचरितम् दण्डी, डा0 ओमप्रकाश, चौ0 औरियण्टालिया दिल्ली, 1983*
13. *ध्वन्यालोक आनंदवर्धन, , ब्या0 जगन्नाथपाठक, चौ0 विद्याभवन वाराणसी, 1997*
14. *यजुर्वेद आर्य साहित्य मण्डल अजमेर, 1968*
15. *रघुवंश कालिदास, चौ0 संस्कृत सीरिज वाराणसी 1961*

16. *वासवदत्ता सुबन्धु, अंग्रेजी व्याख्या, लुइस एप० ग्रे०, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, 1962 (ए संस्कृत रोमांस*
17. *वासवदत्ता सुबनध सं०–हा0 जयदेव मोहनलाल शुक्ल, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर 1966*
18. *वासवदत्ता सुबन्धु सं०–फिट्जतवर्ड हॉल सं० व्याख्या–शिवराम एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल 1859*
19. *वासवदत्ता सुधन्यु, 10 एवं हिन्दी व्या0– 210 गंगासागर राय, चौ० सं० संस्थान, वारा 1999*
20. *वासवदत्ता सुबन्धु संस्कृत व्या0 आर0 वी0 कृष्णमाचारियार श्रीवाणी, विलाससं0 सी0 2 श्रीरंगम् 1906*
21. *वासवदत्ता सुबन्धु संस्कृत हिन्दी शंकरदेवशास्त्री, चौ0 विद्याभवन, वाराणसी. 1985*
22. *साहित्यदर्पण विश्वनाथ हिन्दी व्या0 शालियामशास मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, 1977*
23. *हर्षचरितम् बाणभट्ट, हिन्दी व्या0–140 जगन्नाथ पाठक, चौ0 विद्याभवन वारा0 1976*